दुर्गा सूक्त

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

दुर्गा सूक्त

प्रकार	सूक्त
देवता	माँ दुर्गा
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैदिक
स्रोत	संस्कृत विकिस्रोत (sa.wikisource.org) — महानारायणोपनिषत्, revision 400459, anuvaka 2
आभार	पाठ: संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0), "महानारायणोपनिषत्" (संशोधन 400459)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain (Vedic). Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।

jātavedase sunavāma somamarātīyato nidahāti vedaḥ |

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ १॥

sa naḥ parṣadati durgāṇi viśvā nāveva sindhuṃ duritātyagniḥ || 1||

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।

tāmagnivarṇāṃ tapasā jvalantīṃ vairocanīṃ karmaphaleṣu juṣṭām |

दुर्गां देवीꣳ शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ॥ २॥

durgāṃ devīꣳ śaraṇamahaṃ prapadye sutarasi tarase namaḥ || 2||

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान् स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।

agne tvaṃ pārayā navyo asmān svastibhirati durgāṇi viśvā |

पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ॥ ३॥

pūśca pṛthvī bahulā na urvī bhavā tokāya tanayāya śaṃyoḥ || 3||

विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि ।

viśvāni no durgahā jātavedaḥ sindhuṃ na nāvā duritātiparṣi |

अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥ ४॥

agne atrivanmanasā gṛṇāno'smākaṃ bodhyavitā tanūnām || 4||

पृतनाजितꣳ सहमानमुग्रमग्निꣳ हुवेम परमात्सधस्थात् ।

pṛtanājitaꣳ sahamānamugramagniꣳ huvema paramātsadhasthāt |

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरितात्यग्निः ॥ ५॥

sa naḥ parṣadati durgāṇi viśvā kṣāmaddevo ati duritātyagniḥ || 5||

प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।

pratnoṣi kamīḍyo adhvareṣu sanācca hotā navyaśca satsi |

स्वां चाग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमायजस्व ॥ ६॥

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

svāṃ cāgne tanuvaṃ piprayasvāsmabhyaṃ ca saubhagamāyajasva || 6||

गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसञ्चरेम ।

gobhirjuṣṭamayujo niṣiktaṃ tavendra viṣṇoranusañcarema |

नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥ ७॥

nākasya pṛṣṭhamabhi saṃvasāno vaiṣṇavīṃ loka iha mādayantām || 7||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। जातवेदा अग्नि के लिए हम सोम निचोड़ते हैं; वे शत्रुओं को जला दें और नाव से नदी पार करने की तरह हमें सब दुर्गतियों से पार करें। अग्निवर्णा, तप से ज्वलन्त, सूर्यपुत्री, कर्मफल में पूजित देवी दुर्गा की मैं शरण लेता हूँ; हमें सुतर करने वाली देवी को नमस्कार। हे अग्नि, कल्याण के साथ हमें सब संकटों के पार ले जाओ; पुर और पृथ्वी हमारे लिए विस्तीर्ण हों, सन्तान के सुख के लिए। हे दुर्गति-नाशक जातवेदा, नाव की तरह हमें दुरित से पार करो; अत्रि की भाँति हमारे शरीरों के रक्षक बनो। सेना-विजयी, सहनशील, उग्र अग्नि का हम परम स्थान से आवाहन करते हैं; वे हमें सब दुर्गतियों से पार करें। हे पुरातन, स्तुत्य अग्नि, यज्ञ में होता बनकर बैठो, स्वयं प्रसन्न हो और हमें सौभाग्य दो। हम इन्द्र-विष्णु के मार्ग पर चलें और स्वर्ग के शिखर पर वैष्णव लोक में सुख से रहें।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।